नरोड़ा आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज (हिंदी विभाग)

बी.ए.सेम- 3 हिंदी

SEMESTER-3 HINDI PAPER- 201

'आधुनिक हिन्दी कविता'

पुस्तक- 'कविता के पड़ाव'

सं. हिन्दी अध्ययन समिति गुजरात युनिवर्सिटी अहमदाबाद

अभ्यासक्रम-वर्ष-2020-2021

प्रस्तुतकर्ताः डॉ.करसन रावत

SEMESTER-3 HINDI PAPER- 201 / 'आधुनिक हिन्दी कविता'

पुस्तक- 'कविता के पड़ाव' सं. हिन्दी अध्ययन समिति गुजरात युनिवर्सिटी अहमदाबाद

.....

Unit- 1 कवि- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

1. भूख
2. अपनी बिटिया के लिए

कवि- धूमिल

1. मोचीराम
2. रोटी और संसद

Unit-2

कवि- केदारनाथ सिंह

1. निराकार की पुकार
2. पानी में घिरे हुए लोग

कवि- राजेश जोशी

1. बच्चे काम पर जा रहे हैं
2. शहद जब पकेगा

Unit- 3

कवि- अरुण कमल

1. धार
2. खुशबू रचते हैं हाथ

कवि- उदय प्रकाश

1. नींव की ईंट हो तुम दीदी
2. तानाशाह की खोज

Unit- 4

कवि- कुमार अंमुज

1. एक स्त्री पर कीजिए विश्वास
2. अमीरी रेखा

कवि- नीलेश रघुवंशी

1. भुजरिये
2. फ़र्क

कवि परिचयः सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

- जन्मः ई.स. 1927 , मृत्युः ई.स. 1983
- सक्सेना नयी कविता की दूसरी पीढ़ी के कवि हैं ।
- इनकी कविताएँ 'तीसरा सप्तक' में संकलित हैं ।
- 'कुआनो नदी' से 'कोई मेरे साथ चले' तक की कविताओं में उनकी प्रखर सामाजिक चेतना और जनवादी स्वर व्यक्त हुआ है ।
- 'खूटियों पर टंगे लोग' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया ।

रचनाएः

कविता- 1. काठ की घंटियाँ 2. बाँस का पुल 3. सूनी नाव 3. गर्म हवाएँ, 4. कुआनो नदी 5. जंगल का दर्द 6. खूँटियों पर टँगे लोग 7. कोई मेरे साथ चले

नाटक- 1. बकरी 2. ग़रीबी हटाओ 3. जुलूस

कवि – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

1. भूख 2. फसल 3. अपनी बिटिया के लिए 4. पत्नी की मृत्यु पर

.....

1. भूख

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है ।

झपटता बाज
फन उठाये साँप,
दो पैरों पर खड़ी
काँटो से नन्हीं पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाड़ियों में चलता चीता,
डाल पर उल्टा लटक
फल कुतरता तोता,
या इन सब की जगह
आदमी होता ।

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है ।
सुन्दर दीकने लगता है ।

2. अपनी बिटिया के लिए

पेड़ों के झुनझुने
बजने लगे,
लुढ़कती आ रही
सूरज की लाल गेंद ।
उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी ।

तूने जो छोड़े थे
गैस के गुब्बारेः
तारे, अब दिखायी नहीं देते,
(जाने कितने ऊपर चले गये।)
तूने जो नचायी थी फिरकीः
चाँद, देख अब गिरा, अब गिरा ।
उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी ।